“हिंदी–पवारी शब्दकोश निर्माण:पवारी भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन के विशेष संदर्भ में (Development of Hindi- Pwari Dictionary with special reference to conservation and promotion of Pwari Language)”

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय , वर्धा में एम.फिल. कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-सार

शोधार्थी

तुफान सिंह पारधी

नामांकन संख्या:

2014/01/202/001

सत्र: 2014-15

कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञान विभाग, भाषा विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

गांधी हिल्स, वर्धा (महाराष्ट्र) 442005

सारांश

किसी भी भाषा या उसकी बोली को लंबे समय तक जीवित रखने के लिए उसका संरक्षण करना परम आवश्यक है। वह भाषा जिसकी अपनी कोई लिपि होती है वह प्राय: अधिक सुरक्षित रहती है अपेक्षाकृत लिपि हीन भाषा से। क्योंकि लिपि युक्त भाषा का साहित्य लिखित तौर पर संरक्षितरहता है। परंतु जैसा की हम जानते हैं कि बोलियों में परिवर्तन की गति भाषाओं से अधिक होती है। काल परिवर्तन के साथ बोलियाँ नवीन रूप ग्रहण करने लगती हैं और उनके पुराने रूप लुप्त होने लगते हैं। बोली का प्राचीन रूप लिपिबद्ध नहीं होने के कारण वह सुरक्षित नहीं रह सकती। यदि समय-समय पर बोलियों के रूपों को सुरक्षित रखने के प्रयत्न नहीं होंगे तो, वे लुप्त होती जाएँगी और उनका स्थान नए रूप लेते रहेंगे। पवार जाति की एक अपनी अलग ही भाषा है जो बोलचाल में प्रचलित है जिसे पवारी नाम दिया गया है। **पवारी भाषा यह "कथित भाषा" (बोली /dialect) की श्रेणी में आती हैं।** पवारी भाषा बुंदेली, हिंदी तथा मराठी भाषाओं के मिश्रण से बनी है। इस प्रचलित भाषा में बुंदेली, बघेली, मराठी, मालवी, गुजराती, राजस्थानी इत्यादि के शब्द ज्यादा प्रमाण में है। पवारी भाषा की अपनी कोई विशेष अलग लिपि नहीं है इसे देवनागरी लिपि में ही लिखा जाता है। अत: हम कह सकते हैं कि पवारी भाषा की लिपि देवनागरी है। पवारी के लिपिबद्ध होने के कारण इसका भाषावैज्ञानिक विश्लेषण देवनागरी लिपि में किया गया है। जिसका केंद्र बिन्दु स्वनिम, रुपिम एवं शब्द स्तर है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंधमें द्विभाषी 'हिंदी- पवारी शब्दकोश' सॉफ्टवेयर प्रणाली का निर्माण कार्य किया गया है, जिसमें संज्ञा के अंतर्गत हिंदी/पवारी भाषा के विभिन्न शब्दों जैसे- बर्तनों के नाम, वनस्पति जगत के नाम, जीव जंतुओं के नाम, गाँव में प्रयोग होने वाले नाम आदि के अतिरिक्त विशेषण, सर्वनाम, क्रिया, आदि शामिल हैं। आज का दौर सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकी का दौर है और ऐसे दौर में भाषा की सुरक्षा न सिर्फ पुस्तकों या पत्रिकाओं तक सीमित है बल्कि संगणक, मोबाइल, इंटरनेट आदि विद्युतीय माध्यम तक विस्तृत है। अतः प्रस्तुत शोध के अंतर्गत एक इलैक्ट्रानिक शब्दकोश का निर्माण किया गया। जिसमें पवारी भाषा के शब्द को निवेश करने पर हिंदी, अंग्रेजी, आईपीए और व्याकरणिक कोटी को प्रदर्शित करता है। उक्त शब्द कोश में हिंदी, अंग्रेजी, आईपीए एवं व्याकरणिक कोटी के द्वारा पवारी भाषा के शब्दों का विश्लेषण किया गया है एवं एक डाटाबेस में उसे संग्रहित किया गया है। जो निश्चित तौर पर इस बोली को जीवांतता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

बीजशब्द (Keywords):- हिंदी, पवारी, भाषा, बोली, देवनागरी लिपि, शब्दकोश, सॉफ्टवेयर

Summary

It is very important to preserve any dialect and language for their existence. The languages which have their own script are more secure than scrpitless languages. But as we know the flow of change in dialects are more than languages. Dialects have changed into new forms due to change in time & culture and slowly slowly their old form are disappeared. If we will not preserve their old form from time to time their old form will about to be in dead condition. There is own language of Pawars which is used in communication is known as Pwari. Pwari comes under dialect. Pwari is mixture of Bundeli, Hindi, Malavi and Marathi. A lots of Bundeli, Hindi, Malavi, Guajarati, Rajashtnai, Bagheli and Marathi words are used in this dialect. There is no personal script for pwari, it is written in Devnagari. So we can say that the script of pwari is Devnagari. The linguistics analysis of the pwari language is done in Devnagari script. In this research the pwari language is analyzed on the level of Phoneme, morpheme and word.

In this proposed research, a bilingual 'Hindi-Pwari Dictionary' software system is developed. In this dictionary there are many types of noun used such as utensil names, fruits name, vegetable names, flora and fauna, creature's name, general terms that are used in rural areas, pronoun, adjectives and verbs are in bilingual form of Hindi and pwari.

As we know this is the era of information technology. in this era the preservation of languages are not only in the form of books or magazines but its spread over computer, mobile, internet etc, So electronic dictionary is made in this thesis. When we input pwari word in this dictionary then the output are in Hindi, English and IPA. The information of grammatical categories is also come as output with meaning. In this dictionary there is a database which consists of pwari words i.e. based on Hindi, English, IPA and its grammatical categories. Which is definitely makes an important role in preservation of this dialect.

Keywords: -

Hindi, Pwari, language, dialect, Devnagari, dictionary, software